# स्त्रीवाद
# विमर्श और अनुशासन

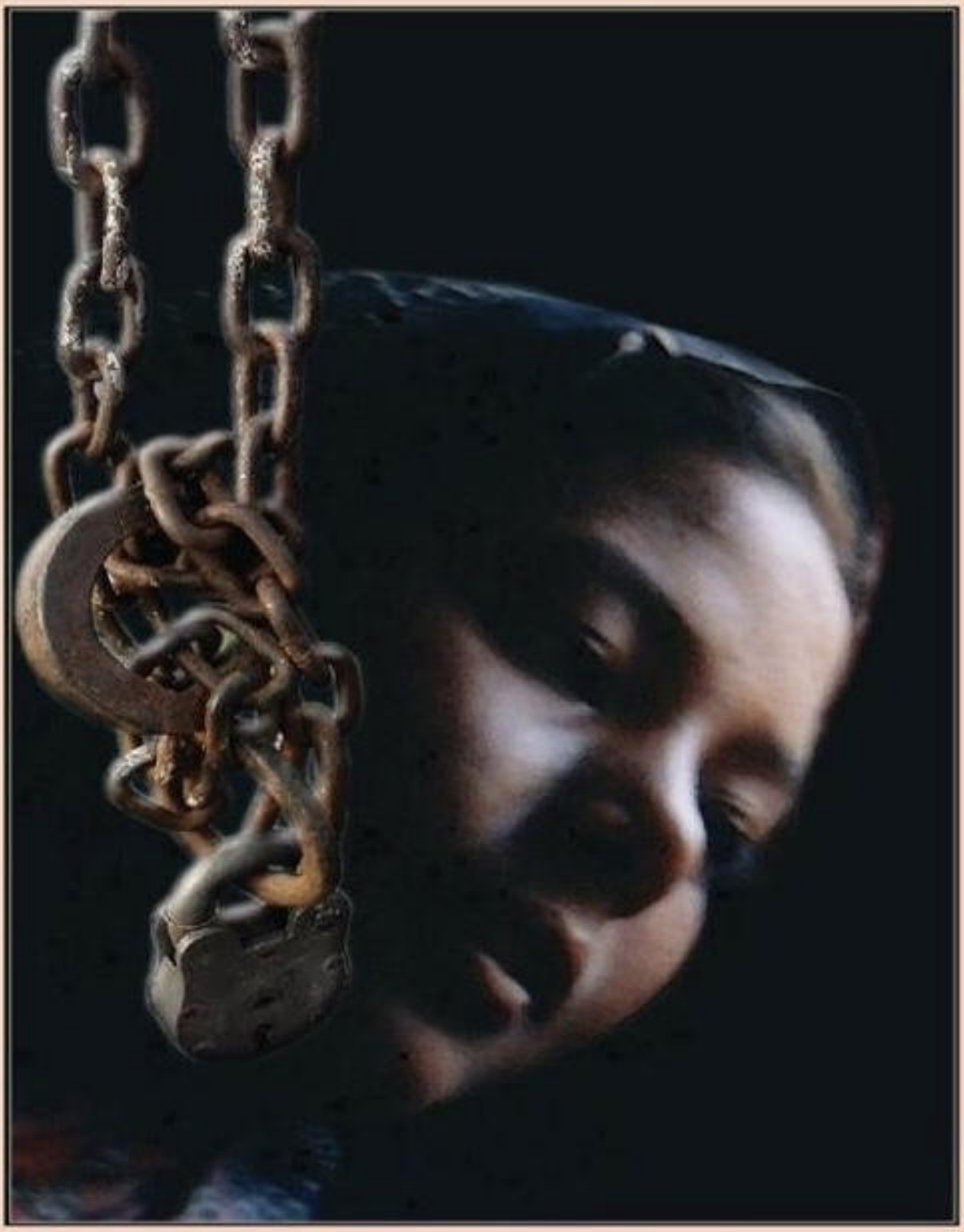

संपादक : संजीव चंदन, धर्मवीर

# स्त्रीवाद

## विमर्श और अनुशासन

**संपादक**

संजीव चंदन, धर्मवीर

**संपादक मंडल**

डॉ. अनुपमा गुप्ता, निवेदिता,
राजीव सुमन, नूतन मालवी

The Marginalised Publication

# अनुक्रम

**संपादकीय**

अपनी बात VII

**आलेख**

1. बहुजन दुःखाय : प्रो. तुलसीराम 11
2. एक दलित आइकॉन के रूप में मायावती का उभार और मीडिया एवं भारतीय महिला आंदोलन की चुप्पी : विवेक कुमार 17
3. हेजियोग्राफी परंपरा में मीरा : कंकरीट की सड़कें और मीराबाई : अनामिका 31
4. मीरा बाई और भक्ति की आध्यात्मिक बाजारनीति : कुमकुम संगारी, अनु.-डॉ. अनुपमा गुप्ता 39
5. सोनिया प्रसंग वितस्तता का राग-विराग : संजीव चंदन 135
6. सत्ता का इंद्रजाल बनाम शब्द का शासन : मृदुला गर्ग 144
7. 'मौन की देह में' : रंजना सक्सेना 155
8. जेंडर और पाठ्यचर्या : दीप्ता भोग 169
9. एक पाठ का बयान : नंदिनी मांजरेकर, अनु.-हरिओम 182
10. धर्म ही जिसका प्राण है : पूर्वा भारद्वाज 186
11. नैतिकता के चौखटे/विरोध के ऐस्थेटिक एप्रोच : संदर्भ महिला काव्य : डॉ. परिमळा अंबेडकर 195

**संवाद**

1. सिर्फ उत्पीड़ित ही उत्पीड़ित की आवाज नहीं उठा सकते : उर्वशी बुटालिया 207
2. साहित्य मनुष्य की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है : मैनेजर पाण्डेय 216
3. सिर्फ स्त्री के लिए ही रोया : राजेन्द्र यादव 227

4. सिर्फ चीत्कार और उच्छ्वास ही लेखन नहीं है : ममता कालिया 237

## मुद्दे

1. आरक्षण का विकल्प : योगेन्द्र यादव, अनु.-अखिलेश कुमार 248
2. प्रभावहीन विकल्प : वृन्दा करात, अनु.-डॉ. अनुपमा गुप्ता 252
3. महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रवाधान : प्रो. आनंद कुमार 256
4. द्विसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र : महिला आरक्षण पर गतिरोध दूर करने का एक प्रयास : मेधा एन. वाडेकर 260
5. मंडल और महिला आरक्षण : वासंत रामन 275
6. स्त्री अध्ययन के पक्ष-विपक्ष : सोम सेन 285
7. विवाहेत्तर संबंधों की नैतिकता : नन्द किशोर आचार्य 291

## जीवन

1. मैं नारीवादी नही, मार्क्सवादी हूं : श्रीलता स्वामीनाथन 296
2. स्त्री आंदोलन से परिवार नहीं टूटना चाहिए : गीता गुप्ता (सेवाग्राम) 299
3. संयुक्त परिवार सुख शांति के बाधक होते हैं : मंदा (सेवाग्राम) 303
4. नारीवाद ग्रामीण दलित महिलाओं तक नहीं पहुंचा : कौशल पंवार 305

# अपनी बात

(2004 और 2009 के स्त्रीकाल अंक में प्रकाशित संपादकीय)

स्त्रीकाल के प्रकाशन की चर्चा के दौरान कई सवाल पूछे गये। मसलन, नारीवादी पत्रिका का संपादक पुरुष क्यों? स्त्रियों को ही स्त्रीवाद पत्रिका का संपादन करना चाहिए अथवा इस तरह की किसी पत्रिका की अलग से जरूरत क्यों है या 'स्त्री का समय' से तात्पर्य उल्टे क्रम में वर्चस्व से तो नहीं बनता कि यदि अब तक वर्चस्व पुरुष का रहा है तो अब स्त्रियों का हो, आदि-आदि।

सबसे पहले तो यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि स्त्रीवाद किसी भी वर्चस्व के खिलाफ है–धर्म, जाति, वर्ग जेंडर या रेस के आधार पर। सुल्तानाज ड्रीम (रुकैया सखावत हुसैन) के समय से आगे भारतीय स्त्रीवाद ने भी काफी प्रगति कर ली है उलटे क्रम में रुकैया की फंतासियों का वर्तमान में न तो कोई अर्थ है और न जरूरत। यद्यपि 19 वीं शताब्दी में 'सुल्तानाज ड्रीम की लेखिका की सारी फंतासियां बहुत सहज और स्वाभाविक हैं–पीड़ाजन्य आक्रोश से और क्या उम्मीद की जा सकती है। परंतु आज का स्त्री स्वर समान सह-अस्तित्व की अवधारणा से निर्मित होता है, जो स्त्री को बाहर लाकर पुरुष की रसोई में या बुर्के में धकेलना नहीं चाहता बल्कि यह आकांक्षा रखता है कि स्त्री भी पुरुष की तरह बंधन मुक्त हो, सड़क से सत्ता तक में भागीदार बने, 'स्त्री का समय' इन्हीं अर्थों में तय होता है।

स्त्री का समय से तात्पर्य एक ऐसे समय से है जिसमें आर्थिक, शैक्षिणक, राजनीतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों, निर्मितियों में स्त्रियों, दलितों, अतिदलितों वंचितों का हस्तक्षेप हो ताकि धर्म, जाति, वर्ग, जेंडर के आधार पर विभेद की तमाम स्थितियां समाप्त हों। ज्ञान के स्रोत, ज्ञान के उत्पादन और फिर उनके वितरण से पितृसत्तात्मक समाज ने जिन तबकों को वंचित कर रखा है, उनका स्वर बने, उनकी